'गणेश' और हमारा जीवन...

वर्षा ऋतु के आने पर 'गणपति बप्पा मोर्या...' की गुंजन छोटे या बड़े मनुष्य के मन मस्तिष्क से बाहर निकलकर वातावरण में सुनाई देने लग जाती है। क्या कभी आपने गणेश की मूर्ति या चित्र को ध्यान से देखा है? अगर आप उसे अच्छी तरह से देखेंगे तो उनके चित्र से ही आध्यात्मिकता का रहस्य जो सीधे हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है, आपको ज्ञात होने लगेगा।

आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि गणपति जब बैठे होते हैं तो

- ब्र. कु. गंगाधर

उनके दाहिने पाँव का थोड़ा-सा भाग पृथ्वी को स्पर्श कर रहा होता है जबकि बाहिनी टांग ऊपर उठी होती है। बायाँ पाँव, दायीं टांग से दबा होता है। चित्रकार अथवा मूर्ति निर्माता किन्हीं आध्यात्मिक रहस्यों को व्यक्त करने के लिए ही गणपति जी का ऐसा आसन दिखाते हैं।

शरीर-विज्ञान के अनुसार हमारा दायाँ हाथ और दायीं टांग हमारे मस्तिष्क के बायें भाग से जुड़े होते हैं और हमारी बायीं टांग और बायाँ हाथ हमारे मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग (राईट हेमिस्फेयर) से जुड़े होते हैं। मस्तिष्क-विज्ञानवेत्ता (ब्रेन साइंटिस्ट्स) कहते हैं कि हमारे मस्तिष्क का बायाँ भाग तर्कप्रधान और विश्लेषणात्मक (एनालिटिकल) तथा सूक्ष्म अन्वेषण (एब्सट्रैक्ट थिंकिंग) में कुशल होता है, जबकि हमारे मस्तिष्क का दायाँ भाग हमारे संवेगों (इमोशन्स) का केन्द्र है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो तर्क प्रधान बायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई दायीं टांग का पृथ्वी को स्पर्श करना संसार तथा इसके तथ्यों (फैक्ट्स) से सम्पर्क बनाये रखने का प्रतीक है। यह इस बात का सूचक है कि यह व्यक्ति इस बात को मानता है कि संसार बना हुआ है (अर्थात् यह स्वप्न-मात्र नहीं है) और कि हमें यहाँ रहते हुए, यहाँ की समस्याओं को हल करना है न कि इनसे आँख मूंद लेनी है।

इसी प्रकार मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई बायीं टांग और बायें पाँव का ऊपर उठे रहना और दायीं टांग से दबे रहना इस बात का सूचक है कि हमारे संवेग और आवेग (इमोशन्स) इस पृथ्वी के आकर्षण से ऊपर उठे होने चाहिए और यह विवेक के अधीन होने चाहिए। ज्ञानवान व्यक्ति के ज्ञान की यही सफलता है कि वह सांसारिक मोह-ममता से उपराम रहता है। वह सांसारिक कर्त्तव्यों को भी निभाता है; वह ऐसा नहीं कहता कि ''हे रामजी, जगत बना ही नहीं है'',परन्तु सांसारिक कामनाओं और तृष्णाओं से ऊँचा उठा रहता है।

गणपति जी के सिंहासन से यह दोनों भाव प्रदर्शित होते हैं- एक तो यह कि वे अभी उठे कि उठे अर्थात् यह कि एक टांग तो उन्होंने नीचे कर ही ली है और दूसरी टांग वे अभी नीचे करना ही चाहते हैं। उनकी इस बैठक से दूसरा भाव यह निकलता है कि उन्होंने एक टांग तो उठा ही ली है और दूसरी भी वे उठा ही रहे हैं क्योंकि तभी तो उनका पाँव केवल थोड़ा-सा स्पर्श ही कर रहा है। यदि हम इनमें से प्रथम भाव लें तो उससे यह प्रतीत होता है कि वे सदा तैयार (एक्टिव एंड एलर्ट) हैं। मतलब वे जब चाहें, कार्य-क्षेत्र में उतर आयें। उनकी इस बैठक से दूसरा यह भाव प्रदर्शित होता है कि उन्होंने मन को संसार से समेट तो पहले ही रखा है, निमित्त मात्र वे कर्म क्षेत्र पर हैं और इस पर भी वे क्षण में ही मन को इससे पूर्णत: हटाकर ऊपर की स्टेज में अविलम्ब रीति से स्थित हो सकते हैं, अर्थात् उनकी ऐसी बैठक भी उनकी ज्ञान-निष्ठ स्थिति की परिचायिका है।

गणपति का वाहन-मूषक

यह कितना विचित्र है कि इतने भारी-भरकम गणपति जी के लिए वाहन है-चूहा! अवश्य ही इसका भी कोई गहन अर्थ होगा। चूहे की यह विशेषता है कि वह हर चीज़ को, चाहे महंगी हो या सस्ती, कुतर-कुतर करता रहता है। अपने खाने के लालच के कारण दूसरे की हर चीज़ को टूक-टूक करके रख देता है। ठीक ऐसे ही कुछ लोग दूसरों की हर एक बात को चाहे वह कितनी ही समझदारी की मूल्यवान क्यों न हो, कुतर-व्योंद करते हैं। वो तर्क का प्रयोग, बात को गहराई से समझने और लाभान्वित होने के उद्देश्य से नहीं करते बल्कि उसका अनुचित प्रयोग करके बात को टूक-टूक करने में लगाते हैं। वे समझते हैं उसे विवेक, परन्तु वह सद्विवेक की बजाए होता कुविवेक। वो हंस की तरह का नहीं, बल्कि चूहे की तरह का लक्षण है। ज्ञानवान व्यक्ति ऐसी प्रवृत्ति को अपने काबू में रखता है। वो तर्क भले ही करे परन्तु कुतर्क नहीं करता, अर्थात् वो तर्क को अपने वश में रखकर प्रयोग करता है। इसी अर्थ में चूहा (मूषक) गणपति जी का वाहन है। गणपति विवेकवान, तर्क सम्पन्न हैं परन्तु वह

- शेष पेज 7 पर

निश्चयबुद्धि बन आगे बढ़ने से हमारी विजय निश्चित

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

अभी हमारे हर संकल्प में, हर श्वास में, हर समय परमात्मा की स्मृति हो। शरीर में हैं तो भी स्मृति है, अगर शरीर अभी छूट जावे तो भी स्मृति में रहें क्योंकि जितना सिमरण करेंगे, सिमर-सिमर सुख पायेंगे उतना कलह-क्लेश मिटेंगे। थोड़ा भी नाराज़गी है तो उसको रखो नहीं, तुरंत मिटा दो। राज़ी रहने से बहुत खुशी होती है इसलिए कभी भी नाराज़ नहीं होना है। इसके लिये हर राज़ को समझना है, जो कुछ हो रहा है अच्छा है, जो होगा सो अच्छा, जो हुआ वो अच्छा... इसलिए मेरे को यह राइट हैण्ड का हाथ अच्छा लगता है। आप भी शान्ति में बैठके यह रिहल्सल करो कि जो हुआ... अच्छा है, जो हो रहा है अच्छा है, जो भी होगा वो अच्छा ही होगा। बस। क्या बोलूँ और, एक परमात्मा बाप हमारे से खुश और मैं उसकी पढ़ाई में जो कमाई है उससे खुश। तो ज़्यादा सोचो नहीं, एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जायेंगे, दूसरी बिन्दी लगाओ 100 हो जायेंगे, तीसरी बिन्दी लगाओ 1000 हो जायेंगे। समझा, सिम्पल बात है। बिन्दी कहाँ लगानी है एक शिवबाबा दूसरा न कोई। शिव भोला भण्डारी है ना, यह वन्डरफुल है। है भोला भण्डारी और कहता है मैं जन्म मरण में नहीं आता हूँ, इसलिए ब्रह्मा तन में आकर के अपना परिचय ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शान्ति का सागर है, वो अनुभव कराता है, बहुत अच्छा है। तो निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहना, निमित्त बनके अपनी जीवन यात्रा सफल करना। परन्तु धरती पर पाँव न हो तो क्या बनेंगे? फरिश्ता। फरिश्तों के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। सदा ही कदम-कदम में पदमों की कमाई है इसलिए पाँव को मैला नहीं बनाना है। अगर पाँव से धरनी पर चलेंगे तो मैले हो जायेंगे इसलिए सदा ही पाँव को साफ रखो, क्योंकि इस पाँव यानी इन कदमों से ही तो सारे विश्व की सेवा करनी है। ऐसे नहीं विश्व की सेवा करने के लिये मेरे को पैसा चाहिए, मेरे को ये चाहिए, इस चाहिए चाहिए को छोड़ो। चाहिए-चाहिए करेंगे तो अन्त मते सो गते... कोई भी ऐसे ख्याल रखने से गति भी ऐसी हो जायेगी, इसलिए कभी भी स्थिति ऊपर नीचे न हो, प्रैक्टिकली निश्चय का बल हो, तो निश्चयबुद्धि विजयंती। भले तन यहाँ है पर मन ऊपर में है, इधर उधर नहीं देखो, ड्रामा अनुसार यह जो पृथ्वी है ना, गोल दिखाते हैं। वहाँ से पैदल चलते हैं क्या! अंगुली से वो भी इशारा करता है, बच्चे निश्चय की कमाल देखते जाओ। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो ज़रा भी हमको यह नहीं लगा अभी कैसे चलेगा। नहीं। यह भी जानते हैं और देखा है विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति को पाने के लिये बाबा ने कैसे पुरुषार्थ किया। बाबा के चेहरे को देख लगता था, यही पुरुषार्थ है। विकर्माजीत माना कोई भी रॉन्ग काम नहीं हो सकता है। विकर्माजीत बनने से कर्मातीत बन सकते हैं। जो कुछ हुआ, हो गया, उसका न चिंतन है, न वर्णन है। तो सहनशीलता और समाने की शक्ति से कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। हमको क्या करने का है, उसको ध्यान में रखना है। दिल कहती है शुक्रिया बाबा आपका, जो आपने यहाँ बिठाके अपना बनाके कैसी-कैसी सेवायें करा रहे हो।

सेवा करते नशा चढ़ा हुआ है हम किसके हैं! निमित्त भाव, निर्माण चित्त के बीच में नम्रता भाव कितना न्यारा प्यारा बना देता है। हरेक का पार्ट अपना है, न्यारा है, दो एक जैसे नहीं हो सकते। जिसके चित्त में सच्चाई है वो आनन्द स्वरूप है, सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप, ऐसी स्थिति में सदा रहना। बाकी सफेद कपड़े जेब खाली, कुछ नहीं है। वो चला रहा है, हम चल रहे हैं। देख रहे हैं सभी, यहाँ से उठो कहाँ जा रहे हैं? कितना अच्छा मेरा बाबा है, जो कहता है तुम यहाँ सिर्फ शान्त रहो, खुश रहो। कोई पूछते हैं आप कैसे शान्त रहते हो? अरे, यह मेरा भाग्य है। भगवान मेरा साथी है और ड्रामा में जो पार्ट है वो बजाने में खुश हैं। तो साथी और साक्षी माना मैं क्या करूँ? करा रहा है ना, ज़िम्मेवारी उसके ऊपर है। हमको सिर्फ कहता है चल उड़ जा रे पंछी, यह देश हुआ बेगाना...। अब इस देश में क्या काम है तुम्हारा...। तो बाबा ने हमेशा निश्चय बुद्धि विजयंती का हमको अच्छा पाठ पढ़ाया है। निश्चय बुद्धि, निश्चिंत रहना। निमित्त भाव और नम्रता से चलना।

अटेंशन के साथ रोज़ स्वयं ही स्वयं की चेकिंग करो

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने खास मधुबन वालों को कहा है कि अगर रिज़ल्ट ठीक निकली तो मैं आऊंगा, मिलूंगा। तो इतनी बाबा ने जब ऑफर की है, तो हम लोगों को अटेन्शन भी इतना देना चाहिए। तो बाबा ने जो कहा कि व्यर्थ संकल्प नहीं चलें, यह चेकिंग किसने की? रिज़ल्ट ठीक रही? चार्ट भी सिर्फ कॉपियों में भरने के लिये नहीं रखना, चार्ट रखना माना चेन्ज। हम भी पहले-पहले रोज़ चार्ट लिखते थे वो ठीक है। लेकिन यह चेक करें कि हमारे में फर्क पड़ रहा है? चार्ट क्यों लिखते हैं? स्वयं को चेंज करने के लिए लिखते हैं ना क्योंकि किसी समय कुछ भी हो सकता है। बाबा अचानक का पाठ तो हमको दे ही रहा है। तो हमारा पुरुषार्थ ऐसा है? मैंने देखा है पुरुषार्थ सभी का चलता है लेकिन चलते-चलते पुरुषार्थ में दृढ़ता कम हो जाती है। जिस समय संकल्प किया, उस समय तो दृढ़ता होती है फिर जब कर्म में आते हैं, बातचीत करते हैं, जो भी ड्युटीज़ होती हैं उसमें आते, संगठन में आते दृढ़ता कम हो जाती है। और दृढ़ता ही सफलता की चाबी है, अगर दृढ़ता कम हो गई तो सफलता जो चाहते हैं वो नहीं होती है। होती है लेकिन जैसा चाहते हैं वो नहीं होगी। तो बाबा ने अटेन्शन खिंचवाया है, उसी अनुसार हम क्या समझते हैं! अटेन्शन है? आज से मेरा संकल्प है कि हर एक को रोज़ अपना दृढ़ता का चार्ट देखना चाहिए। जो भी मैंने पुरुषार्थ में संकल्प किया, उसमें दृढ़ता चलती रही या थोड़ा अलबेलापन आ जाता है, ठीक है कर तो रहा हूँ, हो जायेगा, रहेगा थोड़ेही, टाइम पर पूरा हो जायेगा... ऐसे दृढ़ता कम करने के संकल्प जो आते हैं वो हमको ढीला कर देते हैं। और बाबा को रोज़ अपना सारे दिन का चार्ट देवें जैसे बड़े को देना ही है, ऐसे नहीं बाबा को दिया ना, ऐसे नहीं दृढ़ता से दिया! अपने फायदे को सोच करके दिया या ऐसे ही सुना है तो देना ही है। तो अब कोई प्लैन बनाओ, बना सकते हैं? कैसे बनायेंगे? बना तो सकते हो, शाबाशी है लेकिन कैसे बनायेंगे? अपना अपना बनायेंगे या कोई ग्रुप बैठ करके बनायेगा? क्या सोचा है? तो पक्का है? कल से सभी रात्रि को बाबा को अपनी रिज़ल्ट देके और जो भी कुछ हो गया उसकी माफी भी अभी ले लो। बाबा के हिसाब से तो व्यर्थ संकल्प भी गलती है, तो व्यर्थ संकल्प हमारे चले? समझो कोई चीज़ देखी, यह हो रहा है, उसके संकल्प चल पड़ते हैं यह क्यों हुआ, क्या है, कैसे है, यह कहाँ तक चलेगा, यह नहीं होना चाहिए, मतलब ऐसे फालतू संकल्प चलते हैं.. क्योंकि मेरी ज़िम्मेवारी है ही नहीं इसकी। तो चेक करना है लेकिन पता कैसे पड़े कि चेक आपने किया या नहीं? हम तो कनेक्शन में आते ही नहीं हैं, उसकी क्या विधि हो? अपने ही मन को पक्का करना होगा क्योंकि रोज़ तो कोई आपस में मिलता ही नहीं है तो अपना ही मास्टर बनके अपने को चेक करना पड़ेगा, और कोई विधि नहीं है। इसमें अपने आप ही हेड बनना पड़ेगा। तो एकदम दृढ़ निश्चय करो, दो अक्षर लिखना है, बस। डायरी रखनी है फिर कभी भी बाबा डायरी मंगा के देख सकता है। डायरी में ज़्यादा नहीं लिखना है। व्यर्थ संकल्प चले? कितना टाइम चले? कभी कभी एक ही टाइम पर व्यर्थ संकल्प 10 मिनट भी चल सकते हैं, 2 मिनट भी चल सकते हैं लेकिन टोटल सारे दिन में कितना व्यर्थ संकल्प चले? या मैंने जो लक्ष्य रखा सवेरे कि आज मैं इस बात पर खास अटेन्शन दूँगा, तो वो भी चेक करो कि सारे दिन का जो हमने संकल्प रखा स्वरूप का वो मेरा ठीक रहा या नही? बस। तो यह कर सकते हैं? हो सकता है? क्योंकि हमारा बाबा से प्यार है, लेकिन प्यार में यह व्यर्थ का जो विघ्न पड़ता है उसको मिटाना है। बाबा का आप सबसे प्यार है तो बाबा कोई भी बात अगर सुनते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता है। तो हम जिस लक्ष्य से आये हैं, वो लक्ष्य हमारा पूरा हो रहा है या नहीं?